P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय नारी की स्वतंत्रता और शिक्षा

श्वेता सिंह
सहायक प्राध्यापिका,
राजनीति विज्ञान विभाग,
आइसेक्ट विश्वविद्यालय,
हजारीबाग (झारखण्ड)

सारांश

भारतीय समाज में नारी का एक विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान सदा से रहा है। आर्य–संस्कृति में नारी समाज की एक महत्वपूर्ण सहभागी मानी गई है, इसलिए आर्य पुरुष ने सदा ही उसे अपनी अर्द्धांगिनी माना है। भारतीय गृहस्थ जीवन में नारी की सहभागिता सार्थक दिखाई पड़ती है शायद इसलिए नारी–मर्यादा सवैद सुरक्षित रखने का विशेष ध्यान रखा जाता है। नारी प्राणदात्री है और सरसता का संचार करके सृष्टि के सृजन–कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सर्वश्रेष्ठ साधन है। नारी अपने धर्म–कर्म, ज्ञान–विवेक, तप–त्याग, दया–दान, उपकार आदि तत्वों को अपने हृदय में सदा संजोये रखती है और यही तत्व भारतीय नारी को श्रेष्ठ पद पर स्थापित करता है। इनके तप–त्याग की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम होगी।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव हो सका है। ऐसा माना भी जाता है कि बिना शिक्षा के मनुष्य बिना पूँछ के पशु के समान है। इसलिए समाज के प्रत्येक स्त्री और पुरुष को अनिवार्य रूप से शिक्षित होना चाहिए क्योंकि समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये स्त्री और पुरुष ही तो हैं। अगर पुरुष शिक्षित है, लेकिन स्त्री अशिक्षित है तो जीवन की गाड़ी सुचारू रूप से नहीं चल सकती। शिक्षा के अभाव में सामाजिक जीवन की ह्रासशील स्थिति दिखाई देती है इसलिए शिक्षित और सभ्य समाज के निर्माण में प्रत्येक समाज की, प्रत्येक वर्ग की नारी का शिक्षित होना अनिवार्य है। आज के प्रगतिशील समाज में अभी भी नारी–शिक्षा को नजरअंदाज किया जा रहा है, लेकिन लोग शायद ये नहीं जानते कि किसी को भी शिक्षा से वंचित रखना एक अपराध है। इसीलिए विश्व प्रसिद्ध फ्रांसीसी शासक नेपोलियन बोनापार्ट जैसे योद्धा का भी कहना था कि, "यदि माँ शिक्षित है तो राज्य की उन्नति संभव है।" अर्थात् किसी भी व्यक्ति की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है और माँ ही उसकी प्रथम अध्यापिका होती है, अगर माँ ही अशिक्षित होगी तो एक सभ्य, शिक्षित समाज का निर्माण कैसे होगा। एक परिवार के लिए स्त्री ही मेरूदण्ड स्वरूप होती है, क्योंकि सबसे पहले वह पुत्री के रूप में, फिर पत्नी के रूप में और फिर माँ के रूप में अपने परिवार को सँवारने का काम करती है, और अपनी तीनों ही भूमिकाओं को अच्छी तरह समझ कर अपने कर्त्तव्यों का पालन करती है, निश्चय ही आज की नारी अपने घर से निकलकर हर क्षेत्र में पुरुषों का हाथ बँटा रही है।

स्वतंत्रता तथा शिक्षा भारतीय नारी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, ये स्त्रियों के संपूर्ण विकास के द्योतक हैं। भारत में मध्य और पुर्नजागरण काल के दौरान नारियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी, लेकिन वर्तमान में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना ही शिक्षित होना चाहिए जितना कि पुरुष को। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित नहीं होगी तो देश की सन्तानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता। अगर महिलाएँ शिक्षित हों तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। अर्थात् महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है।

मुख्य शब्द : नारी, स्वतंत्रता, प्रगतिशीलता, विश्वास, उत्थान, सहभागिता, कर्त्तव्य।

प्रस्तावना

वैदिक युग में भारतीय स्त्रियों की स्थिति बहुत ऊँची थी, ऐसा कहा जाता है कि स्त्रियाँ आदर्श स्वरूपा थीं जैसे धन का आदर्श 'लक्ष्मी' में, विद्या का आदर्श 'सरस्वती' में, शक्ति का आदर्श 'दुर्गा' में, पवित्रता का आदर्श 'गंगा' में, सौन्दर्य का आदर्श 'रति' में इसी कारण इन देवियों को 'जगतजननी' की संज्ञा दी गई है। इस युग में घर हो या बाहर, स्त्री की स्थिति बहुत ही अच्छी बताई गई है, यहाँ तक कि शिक्षा के क्षेत्र में भी वे बहुत आगे थीं उस समय स्त्रियाँ

इतनी शिक्षित थीं कि वेद मंत्रों का अर्थ बताने में भी सक्षम थीं। उस समय स्त्रियों की शिक्षा उतनी आवश्यक थी, जितना बालकों के लिए। एक विद्वान का कथन है कि यदि किसी देश के सांस्कृतिक स्तर का पता लगाना है तो उस देश की स्त्रियों की अवस्था कैसी है, यह देखो। इस सत्य को साबित करने के लिए मनु ने कहा है–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"[1]

अर्थात् जिस देश में स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है वहीं देवता वास करते हैं।

जैसे–जैसे समय बीतता गया नारियों की स्थिति में गिरावट दर्ज की जाने लगी। स्त्रियों सामाझी से आश्रिता बन गईं। धीरे–धीरे स्त्रियों को शूद्र की कोटि में रख दिया गया, फिर पुरुषों ने स्त्री को अपनी भोग्य वस्तु बना लिया। नारी अब पशुओं के समान पराधीन हो चुकी थी और नारी को यह तक कह दिया गया–

"ढोल, गँवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी"

हालांकि इस दोहे के बारे में डॉ० रामविलास शर्मा सप्रमाण कह चुके हैं कि यह प्रक्षिप्त अंश है, फिर भी एक समय के समाज में यह धारणा तो थी ही। इस पंक्ति को प्रमाण मान भी किया जाय और इसे थोड़ा बदलकर देखा जाय तो इस पंक्ति की सार्थकता सिद्ध होगी। यदि हम बस एक शब्द 'ताड़न' (प्रताड़ना) को 'तारन' (संरक्षित) में बदल दें, तो इस पंक्ति का अर्थ होगा कि चाहे वो ढोल हो या गँवार हो या शूद्र हो या पशु हो या नारी हो, यदि हम उसे थोड़ा सा संरक्षण दे दें तो यह समाज या व्यक्ति के लिए प्रगति मूलक होता है, ढोल को यदि संरक्षित नहीं किया जाये जैसे उसे जो कसने के लिए रस्सी लगाई जाती है, उसको ठीक से यदि नहीं संरक्षित किया जाये तो उसमें से जो आवाज निकलती है, वह संगीत का साथ अच्छे से नहीं देगी और आवाज बेसुरी लगेगी इसलिए उसे संरक्षण की आवश्यकता है, ठीक उसी तरह स्त्री में भी गुणों की कमी नहीं है, इसका इतिहास गवाह है, जरूरत है तो बस उसे संरक्षित करने की।

भारत में वैदिक काल से ही नारियों की शिक्षा का व्यापक प्रचार हुआ था, मुगल काल में भी अनेक महिला विदुषियों का उल्लेख मिलता है और मुख्य रूप से पुनर्जागरण के दौर में भारत में नारी शिक्षा को नए सिरे से महत्त्व मिलने लगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा सन् 1854 में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं की शिक्षा को स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् 1947 से लेकर भारत सरकार द्वारा लगातार कई ऐसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं कि पाठशाला में ज्यादा से ज्यादा लड़कियों की उपस्थिति बढ़े तथा उन्हें घर से निकल कर स्वतंत्र वातावरण में कुछ सीखने का मौका मिले। तभी उनका विकास सार्थक हो पायेगा। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका जोन इलियोट की थी, जिन्होंने 1849 में पहला महिला विश्वविद्यालय खोला था, जिसका नाम 'बीथुने' कॉलेज था। 1947 में ही विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग बनाया गया, आयोग ने सिफारिश की कि महिलाओं की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जाय कुछ समय बाद भारत सरकार ने महिला–साक्षरता के लिये साक्षर भारत मिशन की शुरूआत की। इस मिशन में महिलाओं की शिक्षा की दर को बढ़ाने की कोशिश की गई तथा बुनियादी शिक्षा उनके लिये अनिवार्य बनाई गई, तथा अपने स्वयं के जीवन तथा शरीर पर फैसला करने का अधिकार देने, स्वास्थ्य, पोषण तथा परिवार नियोजन की समझ की शिक्षा भी महिलाओं को दी जाने लगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय नारी की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव आया है, अब वह घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर देश के विकास में पुरुषों के समान भागीदारी निभा रही है, भारतीय नारी वर्तमान में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में भी खुलकर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। आज के युग का यह दृश्य देखते ही बनता है कि सदियों से दासता में जकड़ी नारियों के जीवन का बदलाव अगर संभव हो पा रहा है, तो इसका श्रेय शिक्षा को दिया जाना चाहिए। एकमात्र शिक्षा ही ऐसी कुँजी है, जो प्रताड़ना की अधिकारिणी कही जाने वाली नारी को आज स्वच्छंद वातावरण में खुलकर साँस लेने के भोग्य बनाती है।

मुगल शासनकाल में नारी जाति को इस्लाम धर्म की मान्यताओं के कारण वह स्थान नहीं मिला, जो उन्हें मिलना चाहिए था। वे भारतीय परंपराओं को नष्ट करने में लगे रहे और नारी जाति को समाज के किसी भी क्षेत्र में आगे आने में बाधा डालते रहे और स्त्रियों को मात्र विलास की वस्तु बनाकर रख दिया था। ब्रिटिश शासन के प्रारंभ में नवजागरण के शुरूआती दौर में ही नारियों के जागरण का भी शंखनाद हुआ। इसके बाद राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों का युग आया जब नारी उत्थान और नारी शिक्षा पर महत्व दिया जाने लगा। वर्तमान में नारी की क्षमता को पुरुष क्षमता से कम आँकना सही नहीं है, पुरुषों को अपना अहंकार त्यागना ही होगा। विश्व के कई देशों में आज नारियाँ प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हैं, और हो चुकी हैं, जो पुरुष को हर दिशा में चुनौती है। हमारे समाज में न्यायपालिका द्वारा जो बेटियों के अधिकार वर्णित हैं, वो बेटियों को ताकत देते हैं और नारी जाति अपने स्वत्व, ममत्व, अस्मिता और अधिकारों को पहचानकर प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ सकेंगी।[2]

भारतीय संस्कृति में नारी को माता के रूप में उपस्थित कर इस रहस्य का उद्घाटन किया कि वह मानव के कामोपयोग की सामग्री न होकर उसकी वन्दनीया एवं पूजनीया है। ध्यान देने की बात है कि 'गणेशाय नमः' के पूर्व 'श्री' लगाया जाता है। राम, कृष्ण, विष्णु, शिव कोई क्यों न हो जबतक उनके पहले उनकी शक्ति नहीं तबतक वे कुछ भी करने में समर्थ नहीं। सीता के बिना राम अधूरे हैं, राधा के बिना कृष्ण अधूरे हैं, जिस संप्रदाय में शक्ति की पूजा नहीं, वह नीरस है। सती, सावित्री, कौशल्या, शकुन्तला, सुमित्रा, देवकी, रोहिणी, राधा, रूक्मिणी, यशोदा, लक्ष्मण आदि ऐसी नारियाँ थीं, जिन्होंने अपने चरित्र से संपूर्ण धरती को कांतिमय बनये रखने में सफलता प्राप्त की। अपने उज्ज्वल चरित्र के प्रकाश से समस्त जगत को प्रकाशवान बनाये रखती हैं।

नारी का सनातन मातृत्व ही उनका स्वरूप है। और स्त्री की रक्षा करना भारतीय संस्कृति का महान लक्षण है।

वर्तमान में सभी ओर जब स्वतंत्रता की आकांक्षा जाग्रत हो गयी है, वो नारी के ह्रदय में भी होना स्वाभाविक है। वैसे भी स्वतंत्रता हमारा परम श्रेष्ठ धर्म है, और नर तथा नारी दोनों को ही स्वतंत्र होना चाहिए। भारत में मध्यकाल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक हमारे समाज में अनेक समस्याएँ अनियंत्रित रूप से बढ़ती रहीं। सती–प्रथा, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा, बहु–पत्नी विवाह, जातिप्रथा, देव–दासी प्रथा, अस्पृश्यता स्त्रियों और दुर्बल वर्गों का शोषण इस प्रकार की समस्याएँ समाज में व्याप्त थी। विभिन्न समाज सुधारकों का आर्विभाव 19वीं और 20वीं शताब्दी में हुआ और जैसे–जैसे देश में शिक्षित लोगों की संख्या बढ़ती गई इन समस्याओं के विरुद्ध जनमत तैयार होने लगा। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के ही प्रभाव से सभी जातियों और स्त्रियों में जागृति आई जिसके फलस्वरूप बाल–विवाह, बहुपत्नी विवाह, दहेज–प्रथा जैसी कुप्रथाओं को लेकर विरोध बढ़ने लगा और अंग्रेजों द्वारा निम्नांकित कानून पारित किये गए।

1. सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829 – राजाराम मोहन राय ने सती प्रथा को समाप्त करने के लिए आवाज उठाई। 1829 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने इस संबंध में अधिनियम बनाया।
2. विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 – ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और राजाराम मोहन राय के अथक प्रयासों के बाद यह कानून बना।
3. बाल विवाह निरोध अधिनियम 1929 – शारदा एक्ट के नाम से भी इस कानून को जाना जाता है। छोटी–छोटी बच्चियों के विवाह पर इस कानून द्वारा रोक लगाने की कोशिश की गई। 1968 में संशोधन करके विवाह के लिए लड़की की आयु 18 और लड़के की आयु 21 वर्ष तय की गई।
4. हिन्दू स्त्रियों का संपत्ति पर अधिकार अधिनियम 1937 – सन् 1937 में स्त्रियों को सम्पत्ति पर अधिकार देने से संबंधित विधेयक पारित किया गया।[3]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान द्वारा भारतीय समाज के प्रत्येक नागरिकों के साथ–साथ नारियों की स्थिति में और अधिक सुधार हुए हैं जिनमें भारतीय नागरिक को अपना जीवन–साथी चुनने का पूरा अधिकार है, स्त्रियां आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्र में भी पुरुषों के साथ समान रूप से कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं, उन्हें तलाक का अधिकार प्राप्त है, पारिवारिक संपत्ति में उन्हें उत्तराधिकार प्राप्त है तथा राजनैतिक क्षेत्र में भी आज की स्त्रियाँ पुरुषों से कम नहीं हैं, और तो और स्थानीय स्तर पर उन्हें पंचायतों में भी आरक्षण सरकार द्वारा दिये जा रहे हैं, सामाजिक चेतना तथा राजनीतिक चेतना द्वारा नारियों की स्थिति पुरुषों के बराबर हो रही है। राजनीति में प्रवेश कर महिलाएँ शासन कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं, आज भारत में रक्षा विभाग में निर्मला सीतारमण, विदेश विभाग में सुषमा स्वराज तथा लोकसभा अध्यक्ष के रूप में सुमित्रा महाजन हैं, जो भारत का विभिन्न देशों में प्रतिनिधित्व अपने–अपने क्षेत्रों से कर रही है।

आधुनिक काल में भारतीय नारियों ने अपने सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर को सुधारने में जितनी प्रगति की है, उसका श्रेय बहुत हद तक डॉ० एनी बेसेन्ट को है, सन् 1914 में उन्होंने मद्रास में 'भारत जागो' शीर्षक से एक भाषण दिया था जिसमें भारतीय नारियों ने अपनी दशा सुधारने, अशिक्षा समाप्त करने की अपील की थी। मई 1917 में प्रथम महिला संघ की स्थापना हुई थी, जिसने नारी जागरण में बड़ी सहायता की थी इसके साथ–साथ महात्मा गाँधी ने भी नारियों की जागृति की ओर विशेष ध्यान दिया। महात्मा गाँधी ने समय–समय पर नारियों को प्रगति के लिए प्रोत्साहित किया और परंपरा की बेड़ियों को तोड़कर उन्हें प्रगति की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। 1914–18 के महायुद्ध से नारियों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ, जिन गुणों के कारण स्त्रियों को अब तक कमजोर समझा जाता था आज वे ही भारतीय राजनीति में अहम भूमिका निभा रही हैं और भारतीय राजनीति का आधार साबित हो रही हैं। इसलिए गाँधीजी का कहना था कि पुरुष पाशिवक बल में भले ही स्त्री से अधिक बलवान साबित होते हैं, लेकिन जहाँ आत्मिक बल की बात आये तो स्त्री पुरुषों से अधिक बलवान साबित होती हैं।

भारतीय नारी स्वतंत्रता और शिक्षा के बल पर अपने व्यक्तित्व को तो संवारती ही है, इसके अलावा आज हर क्षेत्र में नारियों ने अपनी सफलता का परचम लहराया है। वर्ष 2004 में आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, 'किरण मजूमदार' पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें दो सौ करोड़ की संपत्ति वाली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है, इनके अलावा भारत की पहली महिला आई०पी०एस० अधिकारी 'किरण बेदी' को उनके बेहतरीन काम के लिए संयुक्त राष्ट्र मेडल से सम्मानित भी किया गया है, इतना ही नहीं अपनी काबिलियत के दम पर भारत में विभिन्न विभागों के महत्वपूर्ण पदों पर काम कर रही महिलाएँ केवल अपना और अपने परिवार का ही नहीं बल्कि भारत का नाम रौशन कर रही हैं। सुप्रसिद्ध लेखिका और मानवाधिकार कार्यकर्त्ता 'अरूंधती राय' को समाज सेवा के क्षेत्र में अनेक सराहनीय काम करने और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए 2004 में सिडनी शांति पुरस्कार भी दिया गया था। नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने में भी भारतीय महिलाएँ पीछे नहीं हैं, अब तक नौ महिलाओं को शांति पुरस्कार और आठ महिलाओं को कई अन्य क्षेत्रों में नोबेल पुरस्कार भी मिल चुके हैं। अपने ही देश की बेटी सुरीली आवाज की धनी 'लता मंगेश्कर' हर भारतीय भाषा में गाना गा चुकी हैं। उन्हें 'भारत रत्न' और 'दादा साहब फालके' पुरस्कार के साथ–साथ राज्यसभा की सदस्यता भी प्राप्त हो चुकी है। साथ ही सर्वश्रेष्ठ गायिका के लिए कई बार राष्ट्रीय पुरस्कार दिया जा चुका है। भारतीय नारियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, अपनी प्रतिभा के बल पर भारतीय महिलाएँ कामयाबी के कदम समय–समय पर चूमती ही जा रही हैं, अपनी कामयाबी की बुलंदियों को छूने का गौरव प्राप्त है।[4]

कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में भी महिलाओं की अहम भूमिका है, महिलाओं के सहयोग के बिना कृषि कार्य कठिन है। भारत में किसानों की आर्थिक स्थिति इतनी

कमजोर है कि महिलाओं के सहयोग के बिना कृषि कार्य और पशुपालन संभव नहीं, महिलाएँ घरों और बच्चों को संभालने के साथ–साथ खेतों में भी काम करने जाया करती हैं, और पशुपालन के कार्य का तो 80 प्रतिशत कार्य महिलाओं द्वारा ही संपन्न किया जाता है। यदि हम महिलाओं की दिन–चर्या का आकलन करें तो पायेंगे कि सुबह हो या शाम, गर्मी हो या सर्दी इसकी परवाह किये बिना भारतीय निम्नवर्गीय महिलाएँ दिन–रात अपने कामों में लगी रहती हैं। एक मध्यमवर्गीय ग्रामीण परिवार में और खेतिहर मजदूर के घर एक या दो दुधारू पशु पाया जाना लगभग निश्चित है। इन पशुओं की देख–रेख, भरण–पोषण का दायित्व महिलाओं का होता है, पशुओं की साफ–सफाई से लेकर दोहन तक का कार्य स्वयं महिलाएँ करती हैं।

भारत के विकास में महिला साक्षरता का बहुत बड़ा योगदान है, इस बात को हम नकार नहीं सकते, जैसे–जैसे महिला साक्षरता में वृद्धि होती आई है भारत वैसे–वैसे विकास के पथ पर अग्रसर होता आया है। इतना ही नहीं महिलाओं के शिक्षित होने से हमारे समाज के बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद मिली है, साथ–साथ महिला साक्षरता से शिशु मृत्यु दर में गिरावट आ रही है तथा जनसंख्या नियंत्रण को भी बढ़ावा मिला है। वर्तमान में नारी शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है, जैसे जीवन जीने के लिए किसी व्यक्ति को ऑक्सीजन की जरूरत होती है, वैसे ही देश को विकसित होने के लिए सबसे आवश्यक है, महिलाओं का शिक्षित होना क्योंकि अगर महिलाएँ शिक्षित होंगी तो ही वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगी। आज महिलाओं के शिक्षित होने का ही नतीजा है कि उनके साथ दुर्व्यवहार होने का खतरा कम होता नजर आ रहा है। नारी अगर शिक्षित होगी तभी समाज में व्याप्त रूढ़िवादी विचारधारा समाप्त होगी और लोगों के सोच में बदलाव आयेगा और नारी–शोषण से समाज को निजात मिल पायेगा। नारियों के शिक्षित होने और स्वतंत्र रूप से अपने दायित्वों का निर्वाह करने की छूट के ही कारण देश की अर्थव्यवस्था में सुधार आयेगा और भारत विकासशील देश की श्रेणी से निकलकर विकसित देशों की श्रेणी में आ जायेगा।

नारी की जन्मजात प्रतिभा पुरुषों से कहीं बढ़कर है। आज अगर उनकी शिक्षा का प्रतिशत कम है तो इसके पीछे सिर्फ एक कारण है, कि उनकी प्रतिभा के अनुसार उन्हें उचित अवसर नहीं मिल पाया है। तथापि आज भी महिलाएँ अपने सामर्थ्य के अनुसार अगर एक हो जाएँ तो अपनी उस बुलंदी को छूने में तनिक भी देर नहीं लगेगी। लेकिन यह सोचने की बात है कि नारी को जितना सम्मान मिलना चाहिए उतना नहीं मिल पाया। आज भी समाज में वह दृश्य विद्यमान है कि नारियाँ दीन–हीन हालत में और घुटन भरे लम्बे घूँघट में पति की गुलामी करती नहीं थकती, समाज में व्याप्त अनियंत्रित प्रथाओं के कारण भारतीय नारी की सम्मान की रक्षा पूर्णतया नहीं हो पाई है।[5]

अध्ययन के उद्देश्य

आज वर्तमान में जिस तरह से महिलाओं की प्रगति के प्रति हम उदासीन होते जा रहे हैं, उसे पथ पर कैसे लाया जाए यह एक विकराल प्रश्न भारतीय समाज के सामने खड़ा है और इसी विकट प्रश्न का समाधान खोजना मेरे इस लेख का उद्देश्य है, नारियाँ हर दृष्टिकोण से हमारे जीवन में महत्व रखती हैं, और समाज की प्रगति में उनका भरपूर योगदान है, इसलिए उनके संरक्षण के लिए हमें उन्हें शिक्षित अवश्य करना चाहिए तथा उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता देनी चाहिए ताकि देश की प्रगति हो सके।

मैंने अपने विवेक के आधार पर तथा कई पुस्तकों के अध्ययन के उपरांत तथा अन्य स्रोतों के आधार पर नारियों की स्थिति में दर्ज गिरावट का अध्ययन किया और वर्तमान काल में जिस तरह स्त्रियों की अस्मिता का चीरहरण हो रहा है, वह भारत जैसे गौरवशाली देश के लिए कलंक की बात है, अतः अपनी सभ्यता संस्कृति को बचाने हेतु स्त्रियों की स्थिति में ज्यादा–से–ज्यादा सुधार लाना मेरे इस लेख का मूल उद्देश्य है।

साहित्यावलोकन

"भारतीय नारी की स्वतंत्रता और शिक्षा" को समझने के लिए सबसे मुख्य स्त्रोत एवं आधार के रूप में डॉ० उमा शुक्ल द्वारा लिखित "भारतीय नारी अस्मिता की पहचान" में जो वैदिक युग की नारियों की अस्मिता के बारे में चर्चा की गई है उससे प्रेरणा लेकर नारियों की महत्ता को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा "कुमार शांति स्याल" द्वारा लिखित "प्रगतिशील नारी" पुस्तक में आज की प्रगतिशील नारी की बदलती हुई परिस्थिति तथा मुख्य महापुरुषों के कथनों के बारे में जानकारी मिली और इस विशेष मुद्दे को उठाने की प्रेरणा मिली है। इसके अलावा बहुत सारी पुस्तकों के अध्ययन के फलस्वरूप और वर्तमान समाज में व्याप्त व्यवस्थाओं को देखते हुए यह आलेख नारी उत्थान के क्षेत्र में एक छोटा सा प्रयास साबित होगा।

परिकल्पना

1. भारतीय नारी वर्तमान सभ्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
2. भारतीय समाज की प्रगति के लिए नारियों की स्थिति का अवलोकन जरूरी है।
3. भारतीय नारी सामाजिक जीवन का आधार–स्तंभ है, जिसकी वृहत चर्चा अपेक्षित है।
4. वर्तमान त्रस्त समाज में इनकी प्रासंगिकता औषधि के समान है।
5. विश्व के कई देशों में इनका चरित्र आदर्श के रूप में स्थापित है।

अध्ययन–पद्धति

किसी भी लेख में अध्ययन–पद्धति महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इससे प्राप्त परिणामों की विश्वसनीयता और मान्यता पर ही किसी विषय की सत्यता स्थापित होती है। प्रस्तुत लेख में मैंने अध्ययन–पद्धति के रूप में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक स्वरूप को अपनाते हुए, मुख्य रूप से ऐतिहासिक और वर्णनात्मक अध्ययन–पद्धति का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचनों के बाद निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट

एवं गौरवपूर्ण स्थान रखती है, अतः आर्य पुरुष ने उसे सदा ही अपनी अर्द्धांगिनी माना है, इसलिए नारियों के सर्वांगीण विकास के लिए समाज को सदा ही प्रयत्नशील रहना चाहिए, क्योंकि भारतीय सभ्यता और संस्कृति में सदा ही नारियों का सम्मान और आदर झलकता है, इसी भावना के कारण स्त्री अपने उत्तरदायित्व को समझती है, और स्वधर्म–परायण होकर सम्पूर्ण जगत का विकास करती है।

प्राचीन धारणाओं से उठकर जब नारियों ने अपनी शक्ति प्राप्त कर ली है तब आज की नारियाँ अपने घर से ही शुरूआत करती हैं और अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देकर देश को सुपुर्द करती हैं, ताकि देश का नाम रौशन हो सके, परिवार से समाज और समाज से देश के निर्माण में स्त्रियाँ अपना जोर लगा रही हैं ताकि देश को अच्छे नागरिक मिले और देश में सुव्यवस्था का संचार हो। माताएँ यदि अपने कर्त्तव्य पालन में ईमानदारी बरते तो समाज में पुरुषों को भी अपने कर्त्तव्यों के प्रति वफादार होना होगा। कहते हैं कि एक सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री का योगदान होता है, ठीक उसी प्रकार पुरुषों को सन्मार्ग पर लाने में हमारी स्त्रियों की सदा ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह सब तभी संभव होगा जब नारियों को पर्याप्त स्वतंत्रता हो, कुछ भी करने की या अपना विकास करने की स्वतंत्रता के साथ–साथ उन्हें शिक्षित होना भी नितांत आवश्यक है, व्यक्ति की बुद्धि शिक्षा पाकर ही प्रखर हो सकती है और जब हमारी नारियों को पर्याप्त स्वतंत्रता मिले और शिक्षा भी मिले तो हमारी नारियों में साहस और अदम्यता की कहाँ कमी है, इसका उदाहरण हमें इतिहास के पन्नों में समय–समय पर मिलता रहा है, देश की वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, जिन्होंने अपने परिवार के साथ–साथ देश पर भी अपनी वीरता को दर्शाया है।

भारत जैसे देश में यह कोई नई बात नहीं है। हर गली, हर मुहल्लों में कई ऐसी नारी शक्ति का उल्लेख मिल जायेगा जिसपर लिखना चाहें तो कई ग्रंथ भी कम पड़ जायँ। आज पुरुषों से बढ़कर कामयाबी के बुलंदियों को छूने वाली हमारी माताएँ और बहनें दुनिया में नाम कर रही हैं, क्यूँ ? क्योंकि इन्हें थोड़ी सी स्वतंत्रता और शिक्षा मिल गई है, मेरा इस समाज से, इस देश से यह आग्रह है कि अपने ही परिवार में जन्मी बेटियों और अपने परिवार के प्रगतिमूलक स्वरूप बहुओं को आजादी की साँस खुलकर लेने की इजाजत दें, और हर परिस्थिति में इनकी शिक्षा और स्वतंत्रता को बढ़ावा दें, तभी सही मायने में हमारा देश आजाद हो सकता है। जहाँ इन शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी स्वरूपा, हमारे भविष्य की पथ–प्रदर्शिकाओं को दबाया जायेगा वहाँ कितनी भी देश की प्रगति हो सही मायने में देश की प्रगति नहीं समझी जायेगी।

प्रजातांत्रिक भारत में आज नारियों को बदली हुई अवस्था का लाभ मिल रहा है, भारत में बढ़–चढ़कर शासन कार्य से लेकर वैज्ञानिक क्षेत्रों तक स्त्रियाँ बाजी मार रही हैं। प्रजातंत्र के कारण ही स्त्रियों को भारत में शिक्षा की ओर तथा उनकी समस्याओं के समाधान की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। शिक्षा के प्रसार से ही उनके व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में सहायता मिली है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय प्रजातांत्रिक सरकारों ने वास्तव में नारियों को पुरुषों के समान मतदान का अधिकार दिया है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता के बाद नारियाँ भारत में समानता और स्वतंत्रता की दृष्टि से निरंतर आगे बढ़ रही हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि भारत में महिलाओं को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है, कुछ का कहना है कि महिलाएँ अभी बहुत पिछड़ी हुई हैं लेकिन निष्कर्ष यह निकलता है कि भारत में महिलाओं की स्थिति में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं और पूर्ण रूप से परिवर्तन के लिए महिलाओं को स्वयं प्रयत्न करना होगा, अपनी स्थिति को सुधारने के लिए महिलाओं को अपना उद्धार खुद करना होगा, जब तक वे खुद सामने नहीं आयेंगी तो गाँधीजी जैसे पुरुष भी इनकी स्थिति को नहीं सुधार सकते, वस्तुतः नारियों ने अपने अधिकारों के लिए समय–समय पर संघर्ष किया है, और संघर्ष का परिणाम भी अच्छा ही हुआ। नारियों को सामाजिक, राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन के आधार पर कहा जा सकता है कि इनकी स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है।

सुझाव

नारियों को समाज से स्वतंत्रता और शिक्षा मिलनी ही चाहिए और सभ्य और प्रगतिशील नारी को यह चाहिए कि अपनी स्वतंत्रता का दुरूपयोग न करे और अपनी हद में रहकर समाज की प्रगति की सोचे क्योंकि भारत में जो आजकल पश्चिमीकरण का दौर चला है, उसमें कुछ हद तक नारियों की मनोदशा पर पश्चिमीकरण के दुष्प्रभाव ने भारत की सभ्यता–संस्कृति पर सवालिया निशान खड़े किये हैं। जो भी हो लेकिन भारतीय नारी का यह कर्त्तव्य है कि अपनी सभ्यता–संस्कृति को संजोये रखे और अपने परिवार, समाज और देश के भविष्य निर्माण में अपना ज्यादा से ज्यादा सहयोग दे और मुझे विश्वास है कि हमारी प्रगतिमूलक नारियाँ सारी कसौटियों पर खरी उतरेंगी और उतर भी रही हैं, पश्चिमी के देशों से अच्छी चीजों को आत्मसात करें और अपने देश के भविष्य के निर्माण में अपना योगदान दें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शुक्ल, डॉ० उमा : 'भारतीय नारी अस्मिता की पहचान', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007, पृ० 14*
2. *व्होरा, आशारानी : 'स्त्री–सरोकार', आर्य प्रकाशन मंडल सरस्वती भंडार, गाँधीनगर, 2006, पृ० 8*
3. *सोलोमोन, मारिया/डॉ० मंजू : 'भारत की स्वतंत्रता के उपरांत आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण (1947 से 1977)',* Horizon Books, *2017, पृ० 208*
4. *स्याल, कुमार शान्ति : 'प्रगतिशील नारी', आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 2010, पृ० 285*
5. *पांडेय, पृथ्वीनाथ : 'निबंध सागर', प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, 2007, पृ० 204*
6. *भडभडें, शुभांगीः 'विवेकानंद तुम लौट आओं', प्रतिभा प्रतिष्ठान प्रकाशन नई दिल्ली, 2013, पृ0– 256*